समाजद्रष्टा साहित्यकार हरीश मंगलम् के 'तलब' कहानी संग्रह में दलित विमर्श

डॉ. पारुल एल. सिंह
आचार्या श्री कृष्ण प्रणामी आर्ट्स कॉलेज,
दाहोद, गुजरात।
मों नं. 9428673109
Email – parulsndt@gmail.com

पिछली शताब्दी के नवें दशक के मध्य में मारठी साहित्य के रास्ते से गुजराती में आए दलित साहित्य ने भले ही कोई साहित्यिक आंदोलन का रुप धारण न किया है, किन्तु एक उत्तेजना अवश्य जगाई है। गुजराती दलित साहित्य के प्रतिनिधि संकलनों ने जड़ता को तोड़ते हुए एक नए प्रकार के प्रतिबद्ध साहित्य को जन्म दिया। इसने समाज के भले ही एक वर्ण विशेष की पीड़ा को वाणी दी हो, किन्तु प्रतिरोध का स्वर इतना मुखर पहली बार गुजराती साहित्य में दिखाई दिया। हजारों वर्षों के सवर्णवादी सामाजिक, आर्थिक शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठी तो एक उम्मीद पैदा हुई। यह एक ऐसी चिंगारी थी जो अब तक जात-पांत की राख के नीचे दबी-कुचली थी। इसने एक ओर अभिजात्य वर्गीय साहित्य के एकाधिकार को तोड़ा तो दूसरी ओर आधुनिक समाज में सामंतवादी मूल्यों की निरर्थकता को रेखांकित किया। यद्यपि व्यापक स्तर पर दलित साहित्य पर यह आरोप लगता रहा है कि इसने वर्ग-संघर्ष की तीव्रता को कम किया है और अनजाने ही उस प्रकार के संघर्ष ने जनक्रांति को पीछे धकेल दिया है। यह आरोप संभवतः सच हो सकता है किन्तु गुजराती दलित साहित्य के संदर्भ में दलित साहित्य का अवतरण इसलिए स्वागत योग्य है क्योंकि इसके पूर्व के गुजराती साहित्य में प्रतिरोध का स्वर लगभग नदारद और समस्त समाज का साहित्य होने के बावजूद गैरदलित गुजराती साहित्य अपने चरित्र में नितांत व्यक्तिवादी और एकांगी है। दलित साहित्य पहली बार किसी विचारधारा को केन्द्र में रखकर लिखा जाने वाला साहित्य है। इसने ब्राह्मणवाद, सवर्णवाद एवं सामंतवादी मूल्यों पर, दलितों के नाना प्रकार के शोषण एवं दमन की प्रवृत्ति पर एकजुट हमला किया है।

गुजराती दलित साहित्य की सीमा भी यही है। शीघ्र ही अधिकांश दलित साहित्यकार वैचारिक दरिद्रता के कारण पुनरावृत्ति करने लगे। दलित साहित्य की अधिकांश रचनाएं यौन शोषण तथा अस्पृश्यता की घटनाओं से भरी पड़ी है तथा उनमें खोखले आक्रोश के अतिरिक्त ज्यादा कुछ नहीं है। ज्यादातर ऐसी रचनाएँ ध्वंसात्मक साहित्य की फूहड़ रचनाएँ हैं। उनमें ध्वंस के पश्चात् का सृजन व निर्माण नहीं है। कई लोग तो सिर्फ दलित होने की वजह से लेखक हैं और वे जो भी लिखते हैं उसी को दलित साहित्य कहते हैं, मानते है जबकि उनमें लेखकीय प्रतिभा न होने के कारण उनका लेखन मात्र निर्वीर्य, अनुपजाऊ क्रोधाभिव्यक्ति के सिवा कुछ नहीं।

इस दृष्टि से हरीश मंगलम् लब्ध प्रतिष्ठित गुजराती साहित्यकार हैं। लोक की माटी की गंध से सुवासित भाषा की सुगढ़ता, सुगठित व आकर्षक शिल्प उनके साहित्य की विशिष्ट पहचान है। उनके साहित्य में दलित, शोषित, वंचित वर्ग का चिंतन केन्द्र में है। उन्होंने कथा साहित्य व आत्मकथा में मानव मूल्यों के साथ सामाजिक सरोकार का निर्वहन करते हुए सृजन किया है और केन्द्र में मानव और मनुष्यता दोनों प्रमुखता से हैं। उनका साहित्य मनुष्य लोक की उन ग्रंथियों, रुढ़ियों अन्तर्वेदना तथा कराह को पर्त-दर-पर्त खोलता, साथ ही हाशिए पर धकेल दिए गए सामाज को अस्तित्व प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करते दिखाता है। उनकी कहानियों के पात्र अत्यन्त जीवट वाले तथा नवीन दृष्टि से युक्त हैं।

उनके साहित्य का भाव पक्ष जितना सघनता व गहराई लिए हुए है शिल्प पक्ष विविध विशिष्टताओं के साथ बुना गया है। आँचलकिता, सुग्राह्य भाषा, शब्दों का चुटीलापन, वाक्य विन्यास की सुगढता, अभिव्यक्ति का पैनापन समाहित है।

हरीश मंगलम् के पास कहने को बहुत कुछ है। उनकी कहानियाँ हमें बहुत कुछ कहना चाहती हैं। उनके पास अनुभवों के अपार भंडार है। वे अपने निजी अनुभवों को कलात्मकता में ढालते हैं और उन्हें सामाजिक बना देते हैं। रचना में अवतरित होते ही उनके अनुभव वैयक्तिक अनुभव नहीं रह जाते, वे समस्त पाठक के हो जाते हैं। यही मंगलम् की सफलता है। विशेषता भी यही है। वे सवर्णा –असवर्णा की सामाजिक विसंगतियों का रेशा-रेशा उधेड़ते हैं और ऐसा करने में वे कोई जल्दबाज़ी नहीं करते। उन्हें किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की जल्दी नहीं होती यही कारण है कि वे सूक्ष्म बातों को भी इस तरह अपनी कहानियों में बुनते हैं कि उनके संदर्भ बृहत्तर हो जाते हैं। सवर्णा द्वारा असवर्ण स्त्रियों का यौन शोषण उनके यहाँ संपूर्ण असवर्ण जनजसमुदाय का

मानमर्दन है। उनकी कहानियों में यह सारी प्रक्रिया शासक समाज द्वारा शासित समाज को चिरन्तन काल तक दलित बनाए रखने का सोचा-समझा षड़यंत्र है। इसलिए उनकी कहानियाँ अवर्ण समाज के अपने हितों के प्रति जागरुक हो जाने का संकेत देती हैं। इतना ही नहीं, वे एक जन-आंदोलन की पूर्वभूमिका की ओर भी इशारा करती हैं।

अन्य अधिकांश दलित लेखकों की तरह मंगलम् के पात्र सवर्णों के लिंग छेदन कर या उन्हें मारकर संतुष्ट नहीं हो जाते। इसके विपरीत वे इस अन्याय के विरुद्ध जन समर्थन जुटाकर इसे छिन्न-भिन्न कर देने को क्रियाशील हैं।

मंगलम् की कहानियाँ सामाजिक सरोकार की कहानियाँ हैं। वे वर्तमान सवर्णवादी सामाजिक ढाँचे को ध्वंस कर एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के पक्षधर हैं। इसलिए उनके चरित्रों की इति सवर्णों के ध्वंस में न होकर सवर्णवादी विचारधारा के निर्मूलन में होती है। वे उदात्त चरित्र वाले हैं। अपने चरम पर पहुँकर हरीश मंगलम् के पात्र महान् मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं।

हरीश मंगलम् के 'तलब' कहानी संग्रह में कुल 14 कहानियाँ संग्रहित हैं। इस कहानी संग्रह को वर्ष 2001 में गुजरात साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया गया है। गुजराती भाषा में लिखी गई इन कहानियों का फुल चंदगुप्ता ने हिन्दी में अनुवाद किया है। अनुवादित साहित्य में 'तलब' कहानी संग्रह गुजरात के शहरी या ग्रामीण क्षेत्र के दलित अन्य अधिकांश दलित लेखकों की तरह सवर्णों के लिंग छेदन कर या उन्हें मारकर संतुष्ट नहीं हो जाते। इसके विपरीत वे इस अन्याय के विरुद्ध जन-समर्थन जुटाकर इसे छिन्न-भिन्न कर देने को क्रिया शील है ।

'खोज' कहानी का जिन्टो एक ऐसा ही चरित्र है। असामान्यता से पतित होकर सामान्य हो जाने के कई अवसर उसके समक्ष आते हैं किन्तु अन्ततः वह अपनी मानवीय कमज़ोरियों पर विजय पा लेता है और 'सीमा' का दैहिक शोषण करने के बजाय उसकी पुत्री टिना को पितृवत प्रेम देता है। सीमा को अपनी पुत्री के लिए ऐसे व्यक्ति की तलाश थी जो उसे पिता का प्रेम दे सके और नन्ही सी टिना जिन्टो के भीतर के उस प्रेम के जगाने में सफल सिद्ध होती है।

इन कहानियाँ में 'ज्वाला' और 'पगडंडी' दोनों कहानियाँ अलग ही स्थान रखती हैं। ज्वाला का बेनाम नायक खुजली की बीमारी से त्रस्त है। यह खुजली उसे कींचित मीठी भी लगती है। परंतु यह जल्दी ठीक भी नहीं होती है। देसी-विदेशी विविध उपाय करने के बाद भी खुजती है कि ठीक होने का नाम नहीं लेती। यह खुजली प्रतीक है। जाति प्रथा के वश में सदियों से इसे कभी न ठीक होने वाली खुजली की तरह अपनी पैठ समाज में भीतर तक जमा ली है जो मिटने का नाम ही नहीं लेती। चाहे कोई भी उपाय करने का भरसक प्रयत्न किया जाये। ठीक नायक को होने वाली खुजली को जिस प्रकार कोई वैद्य नहीं ठीक कर सके उसी प्रकार जाति प्रथा को भी नस्त-नाबूद करने का ठेका जिन्होंने लिया है वे नहीं चाहते कि ये खत्म हो। यदि ये खत्म हो गई तो उनकी रोजी-रोटी बंद हो जाएगी। नायक के मित्रों ने इसका उपाय ढूंढ निकाला है ekDlZ में परंतु यह कारगर साबित नहीं हो रहा है। कहानीकार कुछ कहते नहीं है किन्तु जो प्रतिमा में से ज्वाला प्रगट होती है वह बेनाम प्रतिमा मानो यह सूचित कर रहीं है कि-

^^ekDlZ । विषय बना दिया है। मात्र चर्चाऐं! शौख पराया नहीं कि 'आर्ट एन्ड आइड़ियोंलोजी' 'आर्ट एन्ड रियालिटी' 'मटीरियालिज्म' 'इक्वलिटी' आदि की चर्चा और वाणी विलास का आरोह अवरोह बस! उसके अलावा और कुछ नहीं। दोस्त।''1

इस संबंध में

"Marxism should be taken as a pinch of the salt"2

कहा गया है।

जबकि 'पग़डंडी' में प्रतिकार की स्थिति को उभारा गया है। तम्बाकू के खेत के बीच की पगडंडी है। लम्बा मार्ग छोटा करने वाली यह पग़डंडी जनमानस की खोज ही है। लेकिन इस खेत का मालिक पटेल को यह पसंद नहीं कि कोई दलित उसके खेत से गुजरे। खेत को पार कर जाने वाले इस पग़डंडी से गुजरते तीन युवा दलित मजदूरों को वह दौड़ा-दौड़ा कर पूरे गाँव में तहकला मचा देता है। चार-पाँच गाँव में वह दौड़-दौड़ उनका पीछा करता है। इस प्रकार पटेल दलितों में एक भय का वातावरण तैयार कर देता है जिससे भविष्य में कोई तोड़ न सके। आखिर धूलसिंह राजपूत के बीच बचाव के बाद तीनों दलित युवा को पटेल के क्रोधाग्नि से बच पाते हैं। धूलसिंह उन तीनों को धिक्कारते हुए कहता है-

''लो करो बात। तुम हो तीन जन और एक कबाड़ी से घबराते हो ? तुम सब खोखले निकले''3

धूलसिंह के शब्द उन तीनों के मस्तिष्क में एक प्रश्न जरुर खड़ा करते हैं जिसके परिणाम स्वरुप यही तीन मिलकर शाम को पटेल की पिटाई करते हैं। पटेल को इतना पीटते हैं कि उसका सारा अहंकार चूर-चूर हो जाता है। परंतु वह किसी को नहीं बता सकता कि उसे किसी दलित न पीटा है। यही इस कहानी की चिंगारी है।

ऐसी ही मनोग्रंथि को जड़-मूल से उखाड़ फैंकने के लिए मराठी साहित्य में 'अण्णाभाऊ साठे' जैसे कहानीकार ने 'फकीरो' और:सवाला मांग' जैसे लडाकू और पराक्रमी पात्रों की रचना करके रॉविन हुड जैसे चरित्रों को गढ़ा है। रोना-गाना, बेचारगी, रिरियाना की कायरता आखिर कब तक ? कहीं तो चिंगारी निकलनी चाहिए?

जिस प्रकार किसी मरीज के लगातार तड़पने से उसके स्वजन बैचेन हो जाते हैं किन्तु उसकी समस्या को दूर नहीं कर पाते न ही उसे पूर्ण रुप से ठीक कर पाते हैं। भयोत्पादक हताशा से अधिक आवश्यक है कि समस्या का मुकाबला निडरता से किया जाए। यही प्रेरक सिद्ध हो सकता है न कि डर कर कमजोर पड़ना।

'श्रद्धा' कहानी की नायिका धनी भी एक ऐसी ही सच्चरित्र महिला है। सुन्दरलाल सेठ के समक्ष वह अपनी आर्थिक दैन्यता तथा जीवन साथी के अभाव में आए खालीपन को भरने के लिए आत्मसमर्पण करती है। किन्तु ज्यों ही सुन्दरलाल की लंपटता का पता चलता है और वह यह जान जाती है कि-

''सुंदरलाल पहले तो प्रतिमा को हाथों हाथ लेता था। अब उसकी ओर देखता भी नहीं। कल की जाज्वल्यमान और रुपसुंदरी पत्नी प्रतिमा आज निरुपयोगी वस्तु की भाँति करुणाजनक दशा में मृत्यु शैया पर पड़ी हुई है। ऐसी अवहेलना सहने से तो फाँसी लगाकर मर जाना अच्छा। सुंदरलाल लुच्चा और लफंगा है। मैं होंऊँ तो.....।''4

बस्स वह सुंदरलाल से किनारा सदैव के लिए कर लेती है।

'प्रेतबाधा' कहानी दलित समाज में व्याप्त अंधविश्वासों का पर्दाफाश करती है और बताती है कि इस समाज के अशिक्षित एवं भोल-भाले लोगों का लाभ धूर्त एंव लोभी लोग कैसे उठाते हैं। धर्मेन्द्र की पत्नी हंसा इसी अंधविश्वास के कारण मृत्यु को प्राप्त होती है। जूगा रबारी भूत भगाने का प्रयास तो करता है किन्तु हंसा की मृत्यु के बाद भी अपनी निष्फलता का कारण देते हुए कहता है-

''माँ, मैया मेरी ईहल माता, हरिजन की देह में कैसे प्रवेश करें और जब तक प्रवेश न करें वह भूतनी बाहर कैसे निकले,''5

इस तरह डोरे-ताबीज से तथा ईहल माँ की मानता से भी न मिटने पर जूना इसी तरह मनगढंत बातें करके लोगों को समझाता था। वह लोगों से इस तरह धन लूटने का व्यापार करता था।

'दलो' उर्फ 'दलसिंह' एक विशिष्ट कहानी है। गुजरात की दलित समाज की विकट समस्याओं में से एक समस्या कपड़ा उद्योग नष्ट होने की भी है। प्रस्तुत कहानी में गुजरात के कपड़ा उद्योग बंद हो जाने के पश्चात् उस पर निर्भर रहने वाले दलित परिवार की दुःखद परिस्थियों का वास्तविक चित्रण लेखक ने किया है। कहानी का दलित पात्र 'दला बेरोज़गार हो जाने के बाद 'दलसिंह' बनकर नौकरी पा जाता है किन्तु ज्योंही लोगों को उसके अवर्ण होने का पता चलता है, उसे प्राणों की रक्षा के लिए भाग जाना पड़ता है। सवर्ण कर्मचारियों की तुलना में दला बहुत ईमानदारी से कार्य करता है किन्तु उसका अवर्ण होना ही उसकी सारी खूबियों पर भारी पड़ जाती है। सवर्ण समाज की संकुचित सोच को लेखक ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

'दाई','कुकुर साँसी' तथा 'कुंड' हरीश मंगलम् की महत्वाकांक्षी कहानियाँ है। ये कहानियाँ उनकी विशिष्ट कहानियाँ हैं, क्योंकि ये कहानियाँ ही उन्हें अन्य दलित कहानीकारों की पंक्ति से उठाकर विशेष स्थान पर पहुँचाती हैं। ये कहानियाँ हरीश मंगलम् की उपलब्धि हैं।

गुजराती दलित कहानियों में विषय की विविधता हमें प्रभावित करती हैं। हरीश मंगलम् की कहानी में बेनी माँ एक अनुभवी एवं कुशल दाई है। सवर्ण पशी की प्रसुति की समस्या जब अनुभवी डॉक्टर भी न सुलझा सके तब बेनी माँ ने उसकी सफल प्रसुति अपनी सुझ-बूझ से करवा दी। समय बीतने पर वही पशी अपनी उसी पुत्र को बेनी माँ का स्पर्श करने से रोकते हुए कहती है-

''देखना कीकला.....बेनी माँ को छूना मत।''6

बेनी माँ हमारे समाज के रुढ़ीगत स्वार्थी व्यवहार का भोग बनती है लेखक ने बेनी माँ की वेदना को कलात्मक रुप में प्रस्तुत किया है। परोपकार करने वाली निःस्वार्थ सेवा करने वाली, अद्वितीय और अकल्पनीय मानव सेवा करने वाली अछूत वृद्धा दाई बेनी माँ के कलेजे पर तीक्ष्ण प्रहार किए जाते हैं और तब गहरी करुणा निष्पन्न होती है।

''बेनी माँ पर जैसे वज्र गिरा हो। पाँव रुके इससे पूर्व ही युगांतर का भार हटाकर दूर खिसक गयी।''7

'कुकुरखाँसी' में कहानीकार ने रतन और कचरा के माध्यम से मृत पशु को ढोने वाले समस्त दलितों की दीनचर्चा एवं वास्तविक स्थिति से हमें रुबरु करवाया है। यह काम सवर्णों की दृष्टि में घृणित है किन्तु कई दलित परिवार की रोजी-रोटी उसी पर निर्भर है। मृत पशुओं पर निर्भर रहने वाला कचरा का परिवार महामारी फैलने पर अगणित पशु मरने पर अपनी पत्नी रतन की प्रसन्नता पर नाराज़ होते हुए कहता है-

''पगली ! किसी का बुरा नहीं चाहते समझी ?''

''सारे साहूकार कंगाल हो गए और तू चमड़ा के पैसे की बात करती है ? आग लगे ऐसे पैसे में.....''8

हरीश मंगलम् की कहानियों में पारिवारिक समस्याओं और मनादशओं का मनावैज्ञानिक चित्रण भी देखने को मिलता है। 'कुंड' कहानी नायक हरजी अपने पूरे परिवार की जवाबदारी को संभालते हुए सरला से विवाह करता है। सरला के शंकालु स्वभाव से किस प्रकार पारिवारिक शांति भंग होती है, यह देखा जा सकता है ।गाँव में आर्थिक तंगी झेलने के बाद शहर में रहने पर किस प्रकार सरला की शंकाएँ दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जाती हैं और हरजी के सारे सामाजिक संबंध बिखर जाते हैं। लेखक ने यहाँ उसका मनोवैज्ञानिक चित्रण बहुत ही बारीकी से किया है। 'बल्ली' शीर्षक कहानी में भी लेखक ने ईश्वर नामक युवक की बीमारी एवं उससे पूर्व उसके साहसिक कार्यों का चित्रण कर शहरों के अस्पतालों में होने वाले गरीबों के शोषण, रिश्वत खोरी को उजागर किया है। क्षय के रोग से पीड़ित ईश्वर जीवन-मृत्यु के बीच झूल रहा है किन्तु अपस्ताल के कर्मचारी तो अपनी जेब गरम करने में ही व्यस्त दिखाई देते हैं। लेखक ने यहाँ शहर के अस्पतालों की बेरुखी पर करारा व्यंग्य किया है। इसी प्रकार 'हानि' शीर्षक कहानी में बुजुर्ग मगनबापा की कुशल क्षेम पूछने तो कई रिश्तेदार आते हैं किन्तु शहर में ले जाकर उनका ईलाज करवाने की तत्परता किसी में दिखाई नहीं देती। मगन बापा और बलम माँ के माध्यम से लेखक ने वर्तमान समय में बुजुर्गों के प्रति युवाओं के दोहरे चरित्र को बड़ी-बड़ी सुंदर ढ़ंग से चित्रित किया है।

हरीश मंगलम् की 'प्रेम ही सत्य है' कहानी में हेतल के प्रति फिलिप के सच्चे प्रेम, प्रेम से उत्पन्न b';kZ, जलन का बखुबी चित्रण किया गया है। साथ ही फिलिप के रुढ़िचुस्त व्यवहार को शहरी वातावरण के प्रतिकूल बताया है। अपनी प्रेमिका पर एकाधिकार के साथ-साथ अपनी इच्छाओं ,अपेक्षाओं को उस पर थोपने से किस प्रकार की उलझन खड़ी होती है यह देखा जा सकता है। फिलिप के बार-बार सत्य का आग्रही होने की बात पर हेतल अपने प्रेम संबंध के विषय में ऑफिस ले लोगों की क्या सोच है, यह बताते हुए कहती है-

''तुझसे संबंध तोड़ लेने के लिए तो भारती ने ही मुझसे कहा था। उसने कहा था कि फिलिप तो दलित जाति का है ? दलित तो नीच होते हैं। भले न वह बाद में ईसाइ बना हो। सवर्ण समाज में कम लड़के हैं जो तू दलित के साथ.....।''9

प्रेम किसी किसी गणित का मोहताज नहीं होता, प्रेम जाति-पांति से ऊपर होता है। प्रेम ही सत्य है। 'तलब' शीर्षक कहानी भी मासूम प्रेम की कहानी है। यह कहानी शुरु होती है बीड़ी की तलब से। भलिया के पास बीड़ी खरीदने के पैस नहीं हैं इसलिए वह बीड़ी के ठूँठ की खोज में गाँव के चबूतरे पर चक्कर लगाता है। बीड़ी का ठूँठा तो मिलता है किन्तु माचिस नहीं मिलती। बीड़ी की तलब उसे शवली के नज़दीक ले जाती है। शवली का स्पर्श उसे बीड़ी की तलब से दूर कर उसके निश्छल प्रेम में डूबो देती है। भलिया इसे स्वीकारते हुए कहता है-

''शवली आज तक मुझे पता ही नहीं था कि बीडी में कोई स्वाद नहीं होता।''10

शवली का विवाह अन्य व्यक्ति से होने पर भलिया का प्रेम संबंध शुरु होते ही खत्म भी हो, जाता है। ग्रामीण जीवन में सामान्य जरुरतों के लिए गरीब समाज किस प्रकार संघर्ष करता है, यह देखा जा सकता है।

''हरीश मंगलम् भारतीय मिट्टी के रचनाकार हैं। गुजराती कहानीकारों में उनकी कई कहानियाँ उल्लेखनीय हैं । उनके पात्र हमारे समाज के जीवंत पात्र है उनकी भाषा हमारे समाज के सबसे निचले तबके की भाषा है। उनकी कहानियाँ प्रतिरोध की कहानियाँ है। जहाँ कहीं भी अत्याचार है, अन्याय है, जहाँ भी मनुष्य के गौरव का हनन होता है, ये कहानियाँ प्रतिरोध की मुद्रा अख्तियार करती हैं''11

दलित साहित्य में प्रतिबद्धता को महत्व देने वाले हरीश मंगलम् निष्ठा पूर्वक सर्जन करते रहे हैं। 'तलब' कहानी संग्रह की कहानियाँ सच्चे अर्थ में भावक को दलित समाज के सत्य की अनुभूति कराने वाली हैं।

ISSN : 2583-2948

संदर्भ सूची

1. तलब नवभारत प्रकाशन, दिल्ली सं. हरीश मंगलम् पृ. सं. 100-101
2 वार्तालोक सं. हरीश मंगलम् पृ. सं. 10
3. तलब सं. हरीश मंगलम् पृ. सं. 85
4. वही पृ.सं. 81
5. वही पृ. सं. 97
6. वही पृ. सं. 50
7. वही पृ. सं. 51
8. वही पृ. स. 27-28
9. वही पृ. सं. 74
10. वही पृ. सं. 109
11. वही भूमिका से